Agricultural Development in India

= Agriculture in India employs nearly half of the workforce in the country.

= It contributes to 17.5% of the GDP (in 2015-16).

= विगत कुछ दशकों में उद्योग तथा सेवा क्षेत्र में अधिक प्रगति हुई है वहीं पर कृषि क्षेत्र का योगदान निरंतर घटता चला जा रहा है। 1950 में यह 50% से अधिक था वहीं पर 2015-2016 में यह घटकर 15.4% हो गया।

= भारत खाद्यान्न के उत्पादन में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। गेहूँ, चावल, दालें, गन्ना तथा कपास के उत्पादन में भारत अग्रणी है। 2013 में भारत दलहन के उत्पादन में (विश्व स्तर पर) 25% का योगदान था उसी तरह चावल 22% तथा गेहूँ 13% तथा कपास 25% विश्व स्तर के उत्पादन में योगदान था।

Agricultural Production

खाद्यान्न का कुल उत्पादन जो कि 1950-51 में 51 million tone था वह बढ़कर 2015-16 में 252 million tone हो गया वहीं 2016-17 में यह बढ़कर 272 million tone हो गया.

Green Revolution 1960 में आने के बाद चावल और गेहूँ के उत्पादन में 78% खाद्यान्न का उत्पादन देश में हुआ है। उम्मीद है 2025 तक यह बढ़कर 300 million tone हो जाने की सम्भव है।

इन वर्षों के बावजूद Agriculture में कुछ key issues हैं जोकि कृषि की उत्पादकता को प्रभावित करते हैं इनमें मुख्य रूप से हैं

1. decreasing size of Agricultural land holding
2. Dependence on the monsoon, -
3. inadequate irrigation facilities
4. imbalanced use of soil nutrients resulting loss of fertility
5. Uneven access to modern technology in different parts of the country.

→

6. Lack of access to formal agricultural credit.
7. Limited procurement of food grain by govt. agencies.
8. Failure to provide MSP to agricultural produce.
9. Failure of land laws or ownership.
10. Orthodox nature of the farmers.